[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

Sr. No. of Question Paper : 1552 L

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : Hindi Upanyas

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi : DSE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिन्दी उपन्यास के विकास में यथार्थवाद और आदर्शवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

"उपन्यास मानव जीवन का चित्र है" - इस कथन के आलोक में उपन्यास की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

P.T.O.

2. श्रीनिवास दास अथवा श्रीलाल शुक्ल के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

"जीवन के संघर्षों ने उसके भीतर सेवा और त्याग की भावना जगा दी"- इस कथन के आलोक में सुखदा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. 'रागदरबारी' उपन्यास के आधार पर ग्रामीण जीवन की समस्याओं का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रागदरबारी' उपन्यास के आधार पर पंचायत तथा राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से **किसी एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12)

(क) उसने सिर झुकाकर कहा - 'औरत की जिन्दगी और है ही किसलिए बहनजी! वह अपने दिल से लाचार है, जिससे वफ़ा की उम्मीद करती है, वही दगा करता है। उसका क्या अख्तियार?

लेकिन बेवफाओं से मुहब्बत न हो, तो मुहब्बत में मजा ही क्या रहे। शिकवा-शिकायत, रोना-धोना, बेताबी और बेकरारी यही तो मुहब्बत के मजे हैं, फिर मैं तो वफा की उम्मीद भी नहीं करती थी। मैं उस वक्त भी इतना जानती थी कि यह आँधी दो-चार घड़ी की मेहमान हैय लेकिन मेरी तस्कीन के लिए तो इतना ही काफी था कि जिस आदमी की मैं दिल में सबसे ज्यादा इज्जत करने लगी थी, उसने मुझे इस लायक तो समझा। मैं इस कागज की नाव पर बैठकर भी सागर को पार कर दूँगी।

अथवा

(ख) तब वकीलों ने लंगड़ को समझाया। बोले कि नक़ल बाबू भी घर-गिरिस्तीदार आदमी हैं। लड़कियाँ ब्याहनी हैं। इसलिए रेट बढ़ा दिया है। मान जाओ और पाँच रुपये दे दो। पर वह भी ऐंठ गया। बोला कि अब यही होता है। तनख्वाह तो दारू- कलिया पर खर्च करते हैं और लड़कियाँ ब्याहने के लिए घूस लेते हैं। नक़ल बाबू बिगड़ गया। गुरकिर बोला कि जाओ, हम इसी बात पर घूस नहीं लेंगे। जो कुछ करना होगा, क़ायदे से करेंगे। वकीलों ने बहुत समझाया कि 'ऐसी बात न करो, लंगड़ भगत आदमी है, उसकी बात का बुरा न मानो,' पर उसका गुस्सा एक बार चढ़ा तो फिर नहीं उतरा।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (9×2=18)

(क) उपन्यास के तत्व

(ख) उपन्यासकार जैनेंद्र

(ग) सकीना का चरित्र-चित्रण

(घ) रागदरबारी उपन्यास की प्रासंगिकता